

## धर्मचक्र तप

धर्मचक्र तप यह तप चहु गती नाशक है। इस तप का प्रारंभ अष्टम (तेला) से होता है एवं ३७ उपवास एकांतर से, अंत में अष्टम करके पारणा। इस प्रकार यह तप ८२ दिन में पूर्ण होता है।

1. **12 प्रदक्षिणा (फेरी) एवं 12 खमासमण** लगायें।  
(अ) फेरी लगाते हुए निम्न दोहा बोलें –  
**परम पंच परमेष्ठिमां, परमेश्वर भगवान्।**  
**चार निक्षेपे ध्याइये, नमो नमो जिन भाण॥**  
(ब) एक-एक फेरी लगाने के बाद निम्नलिखित पदों का क्रमशः उच्चारण करते जायें।

1. अशोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
2. पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
3. दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
4. चामर युगल प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
5. स्वर्ण सिंहासन प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
6. भामण्डल प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
7. देव दुंदुभी प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
8. छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
9. अपायापगमातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः

## धर्मचक्र तप

धर्मचक्र तप यह तप चहु गती नाशक है। इस तप का प्रारंभ अष्टम (तेला) से होता है एवं ३७ उपवास एकांतर से, अंत में अष्टम करके पारणा। इस प्रकार यह तप ८२ दिन में पूर्ण होता है।

1. **12 प्रदक्षिणा (फेरी) एवं 12 खमासमण** लगायें।  
(अ) फेरी लगाते हुए निम्न दोहा बोलें –  
**परम पंच परमेष्ठिमां, परमेश्वर भगवान्।**  
**चार निक्षेपे ध्याइये, नमो नमो जिन भाण॥**  
(ब) एक-एक फेरी लगाने के बाद निम्नलिखित पदों का क्रमशः उच्चारण करते जायें।

1. अशोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
2. पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
3. दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
4. चामर युगल प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
5. स्वर्ण सिंहासन प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
6. भामण्डल प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
7. देव दुंदुभी प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
8. छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
9. अपायापगमातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः

10. पूजातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
11. वचनातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
12. ज्ञानातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः

(स) प्रत्येक पद का उच्चारण करने के पश्चात् खमासमण देवें।

2. **12 साधिया** करके ऊपर 1 नग फल (केला, सेव, नाशपत्ती, श्रीफल, बादाम आदि) तथा 12 नग नैवेद्य (चक्की, मखाने, चीरोंजी, साकर आदि) यथाशक्ति चढ़ायें।
3. 12 लोगस्स का **कायोत्सर्ग** करें।
4. **‘ऊँ ह्रीं नमो अरिहंताणं’** की **20 माला** फेरें (पानी पीने के पहले 5 माला अवश्य फेरें)।
5. **चैत्यवंदन तथा देववंदन** करें।
6. यथासमय पच्चक्खाण लें।
7. जल लेने के पूर्व **पच्चक्खाण पारने की क्रिया** करें – इरियावहियं क्रिया, जयउसामिअ का चैत्यवंदन, मुंहपत्ती पडिलेहण आदि।

10. पूजातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
11. वचनातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः
12. ज्ञानातिशय प्रातिहार्य संयुताय श्री अर्हते नमः

(स) प्रत्येक पद का उच्चारण करने के पश्चात् खमासमण देवें।

2. **12 साधिया** करके ऊपर 1 नग फल (केला, सेव, नाशपत्ती, श्रीफल, बादाम आदि) तथा 12 नग नैवेद्य (चक्की, मखाने, चीरोंजी, साकर आदि) यथाशक्ति चढ़ायें।
3. 12 लोगस्स का **कायोत्सर्ग** करें।
4. **‘ऊँ ह्रीं नमो अरिहंताणं’** की **20 माला** फेरें (पानी पीने के पहले 5 माला अवश्य फेरें)।
5. **चैत्यवंदन तथा देववंदन** करें।
6. यथासमय पच्चक्खाण लें।
7. जल लेने के पूर्व **पच्चक्खाण पारने की क्रिया** करें – इरियावहियं क्रिया, जयउसामिअ का चैत्यवंदन, मुंहपत्ती पडिलेहण आदि।